**पर्यावरणीय प्रदूषण** - मानवीय या अन्य कारणों से पर्यावरण में हानिकारक घटकों का प्रवेश हो जाता है। इस स्थिति में पर्यावरण दूषित हो जाता है। तथा जीव समुदाय में किसी न किसी रूप में हानिकारक सिद्ध हो जाता है। पर्यावरण में इस अन चाहे परिवर्तन को ही पर्यावरणीय प्रदूषण कहते हैं।

**प्रदूषण का अर्थ** - हवा, पानी मिट्टी आदि का अवांछित द्रव्यों से दूषित होना, जिसका सजीवों पर प्रत्यक्ष रूप से विपरीत प्रभाव पड़ता है तथा पारिस्थितिक तन्त्र को नुकसान द्वारा अन्य प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ते हैं। वर्तमान समय में पर्यावरणीय अवनयन का यह एक प्रमुख कारण है।

प्रदूषण आज की दुनिया की एक गंभीर समस्या है। प्रकृति और पर्यावरण के प्रेमियों के लिए यह भारी चिंता का विषय बन गया है। इसकी चपेट में मानव-समुदाय ही नहीं, समस्त जीव-समुदाय आ गया है। इसके दुष्प्रभाव चारों ओर दिखाई दे रहे हैं।

प्रदूषण का शाब्दिक अर्थ है - गन्दगी वह गन्दगी जो हमारे चारों ओर फैल गई है और

G.K.

classmate
Date 23.08.2020
Page

जिसकी गिरफ्त में पृथ्वी के सभी निवासी हैं उसे प्रदूषण कहा जाता है। पर्यावरण को प्रभावित करने वाले हानिकारक पदार्थ और विषैले पदार्थ पर्यावरण प्रदूषण का निर्माण करते हैं। जिससे पर्यावरण में अपरिवर्तनीय परिवर्तन होते हैं। प्रदूषण पदार्थ प्रकृति में होने वाले पदार्थ या बाहरी मानव गतिविधियों के कारण बनाए जाते हैं। प्रदूषक भी पर्यावरण में उर्जा की कमी के रूप हो सकते हैं। प्रदूषकों और पर्यावरण के घटकों में होने वाले अन-चाहे परिवर्तन को ही पर्यावरणीय प्रदूषण कहते हैं। जो जीव समुदाय के लिए किन न किसी रूप में हानिकारक सिद्ध होती है।

प्रदूषण आज दुनिया की सबसे बड़ी समस्या बन चुकी है। प्रदूषण से तात्पर्य गन्दगी से है और प्राकृतिक संतुलन में दोष पैदा होने से है। प्रदूषण की गिरफ्त में आज पूरा मानव समुदाय ही नहीं बल्कि सभी जीव जन्तु और वनस्पति भी इसकी चपेट में हैं।

प्रदूषण के प्रति जागरूकता फैलाने के उद्देश्य से स्कूल, कॉलेजों में इसके लिए बच्चों को जागरूक किया जाता है।

आओ दोस्तो कसम ये खाये, प्रदूषण
को हम दूर भगायें"...

**प्रदूषण**- प्रदूषित वातावरण की वजह से भयंकर बिमारीयां और महामारियां जन्म ले रही है, जो मानव जाति के लिए विनाशकारी साबित हो रही है, जैसे - प्लेग, हैजा, कोरोना, फ्लू आदि।

पर्यावरण संरक्षण स्वस्थ जीवन के लिए सर्वप्रथम है। इस पृथ्वी पर निवास करने वाले हर इन्सान को इसकी सुरक्षा के लिए हर संभव प्रयास करना चाहिए ताकि जल प्रदूषण, वायुप्रदूषण, ध्वनी प्रदूषण मृदा प्रदूषण इत्यादि प्रभावों से बचा जा सके।

प्रकृति पर्यावरण न केवल हमारा पोषण करती है बल्कि हमारे स्वास्थ्य और विकास के लिए बहुत सारे प्राकृतिक संसाधन प्रदान करती है। लेकिन जैसे-जैसे समय बीत रहा है, हम और अधिक स्वार्थी होते जा रहे हैं और अपने पर्यावरण को प्रदूषित करते जा रहे हैं। जिससे ~~हमारे~~ जो हमारे स्वास्थ्य और भविष्य को भी प्रभावित करेगा। पृथ्वी पर आसानी से जीवित रहना सम्भव नहीं होगा। प्रदूषण के कारण दूषित तत्व मान के शरीर के अन्दर

अपने प्रदूषकों को डालते हैं और परिणाम स्वरूप रोग होते हैं।

पर्यावरण प्रदूषण के कारण होने वाली बिमारियों में क्रॉनिक ऑब्सट्रक्टिव पल्मोनरी डीजीज, अस्थमा, लंग कैंसर, स्किन कैंसर, लेड पॉइजनिंग, कार्डियोवस्कुलर डीजीज एंड स्ट्रोक, रेडिएशन इनेबल्ड कैंसर, मरकरी पॉइजनिंग, जन्मजात डिसएबिलिटी, एलर्जी, फेफड़े की बिमारियाँ हैं, जो ऑक्यूपेशनल एक्सपोजर के कारण होती हैं।

हमारी पृथ्वी पर हर जीवित प्राणी के लिए अस्वस्थ्य भविष्य के रास्ते पर आगे बढ़ रही है। इसलिए, हमें उन कारकों के बारे में पता होना चाहिए जो हमारे पर्यावरण को प्रदूषित करते हैं।

"राष्ट्रीय प्रदूषण नियन्त्रण दिवस" उन लोगों की याद में मनाया जाता है जिन्होंने "भोपाल गैस त्रासदी" में जान गवा दी थी। उन मृतकों को सम्मान देने के लिए भारत वर्ष में हर 2 दिसम्बर को मनाया जाता है।

भोपाल गैस त्रासदी 1984 में 2 दिसम्बर और 3 दिसम्बर की रात में स्थित यूनियन कार्बनडई ऑक्साइड रसायनिक संयत्र से जहरीला रसायन जिसे मिथाइल आइसोसाइनेट (M.I.C) के रूप में जाना जाता है के साथ-साथ अन्य अन्य रसायनों के रिसाव के कारण हुई थी।

—